# असफलताओं का कीर्तिमान

प्रेरितों के काम पुस्तक बहुत सी सफलताओं को प्रकट करती है, परन्तु यह उन असफलताओं को नज़रअन्दाज नहीं करती, जो छुटकारे के बारे में अनन्त शिक्षाएं भी देती हैं। इस पुस्तक में इतनी सारी अद्भुत घटनाएं हैं कि कई बार तो व्यक्ति भूल ही जाता है कि इसमें निराशा के साथ-साथ असफलताएं भी लिखी गई हैं।

बाइबल की पिछली पुस्तकों की प्रत्येक घटना प्रेरितों के काम की घटनाओं की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करती है। पुराने नियम की उनतालीस पुस्तकों को एक साथ पढ़ने पर, निश्चय ही आशाएं मिलती हैं: परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ प्रतिज्ञाएं कीं (उत्पत्ति 12:1-3; 22:17, 18); उसने मूसा तथा इस्राएलियों से प्रतिज्ञा की कि वह मूसा के जैसा एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा (व्यवस्थाविवरण 18:15); और उसने दाऊद के पुत्रों में से एक को मसीह के सिंहासन पर बिठाने की प्रतिज्ञा की (1 शमूएल 7:12, 13)। इसके अलावा, बाद के भविष्यवक्ताओं ने भी जिनमें यशायाह, योएल, मीका तथा दानिय्येल थे, भविष्यवाणियां कीं। "यहोवा के भवन का पर्वत" (यशायाह 2:2) शिक्षा के नये ढंगों, सब शरीरों पर पवित्र आत्मा के बहाए जाने और उस राज्य की स्थापना से जिसने कभी नाश नहीं होना था, अभी ज्ञात होने थे या लोगों को उनका अनुभव होना था।

नये नियम की पहली चार पुस्तकों का संदेश किसी ऐसी घटना की प्रतीक्षा की ओर संकेत कर रहा था जो अभी होने वाली थी। यीशु ने कहा "मैं ... अपनी कलीसिया बनाऊंगा" (मत्ती 16:18)। उसने प्रतिज्ञा की कि उस समय रह रहे लोगों में से कई तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे जब तक वे परमेश्वर के राज्य को सामर्थ के साथ आता न देख लें (मरकुस 9:1)। अपने स्वर्गारोहण से कुछ ही समय पूर्व, उसने अपने प्रेरितों को बताया "जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो" (लूका 24:49)।

नये नियम में प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद की पुस्तकों में, यह देखना अधिक आसान है कि एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ चुका था। गलतिया (गलतियों 1:2) और आसिया (प्रकाशितवाक्य 1:4) में "कलीसियाएं" थीं। "प्रभु भोज" (1 कुरिन्थियों 11:17-34), प्रत्येक सप्ताह चंदा देना (1 कुरिन्थियों 16:1, 2) और यीशु के नाम में प्रार्थना करना (1 थिस्सलुनीकियों 5:17, 18; 1 तीमुथियुस 2:5; इफिसियों 5:20) आदि को नई तथा अलग उपासना पद्धतियों को भिन्न-भिन्न माना जाता था। इब्रानियों 8:6, 7 में तो परमेश्वर के साथ वाचाओं के बदलने तक का उल्लेख है।

इसलिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक परमेश्वर के प्रकाशन की प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु है। यह बाइबल की ''धुरी'' है, जो परमेश्वर की छुटकारे की योजनाओं में सबसे बड़ी योजना का केन्द्र है। इसमें उद्धार के लिए पिता के अनुग्रह, पुत्र के बहुमूल्य लहू से खरीदने की प्रमुख घटनाओं का ब्यौरा है (प्रेरितों 20:28)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक आत्मा की प्रेरणा से दी गई अन्य पैंसठ पुस्तकों में से किसी भी प्रकार अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, फिर भी यह सभी पुस्तकों को समझने के लिए कुंजी का काम करती है। प्रेरितों के काम में होने वाली घटनाओं को समझने में असफलता दूसरी सभी पुस्तकों को सही ढंग से समझना असम्भव बना देगी। एक पल के लिए विचार करें कि यदि बाइबल में प्रेरितों के काम की पुस्तक न होती तो क्या होता। इसकी अपूर्णीय कमी शायद उलझन को ही बढ़ावा देती है। प्रत्येक युग के लिए परमेश्वर की योजना को समझने में किसी भी प्रकार की उन्नति एक रहस्यमयी खालीपन से रुक जाती है।

## सफलताएं

प्रभु के निमन्त्रण पर पहले दिन कलीसिया में लगभग तीन हज़ार सदस्यों को मिलाया गया (प्रेरितों 2:41) था। यह संख्या शीघ्र ही पांच हज़ार पुरुषों से बढ़ गई, जिसमें महिलाएं तथा बच्चे शामिल नहीं थे (प्रेरितों 4:4)। बाद के दिनों में बहुत से लोग वचन को मानते रहे (प्रेरितों 5:14)। हर जगह सामरिया की तरह बहुत से लोग वचन को सुनकर प्रभु की ओर लौटने लगे (प्रेरितों 8:4-8)। कूश देश के ''एक व्यक्ति के यीशु को उद्धारकर्ता मानने'' से अफ्रीकी महाद्वीप भी अछूता नहीं रहा (प्रेरितों 8:26-39) था।[1]

तरसुस के शाऊल ने यीशु के लिए इन आरम्भिक विजयों का बड़े ज़ोर से विरोध किया; परन्तु शीघ्र ही, उसे भी उन विजयों में शामिल कर लिया गया (प्रेरितों 9:1-22)। उसकी ऐतिहासिक, अभूतपूर्व तथा अद्वितीय मिशनरी यात्राओं से पहली शताब्दी के ज्ञात जगत के आगे अन्य महाद्वीपों में सुसमाचार का प्रचार करने में सहायता मिली। सचमुच, प्रेरितों के काम में उत्साहित करने वाली सफलताओं तथा विजयों का वर्णन मिलता है।

## सफलताओं से बढ़कर असफलताएं

पहले, जब यहूदी पर्वों को मनाने के लिए दस लाख से अधिक यात्री[2] यरूशलेम में एकत्र हुए थे, तो पश्चात्ताप तथा बपतिस्मे के लिए पतरस की बुलाहट को *केवल लगभग तीन हज़ार लोगों ने* ही स्वीकार किया था। ''जिन्होंने [प्रसन्नता से; KJV] [पतरस का] वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 2:41)। जिन्होंने *वचन ग्रहण नहीं किया* उनका क्या बना? उस यादगारी दिन पर सुसमाचार का संदेश सुनने वाली भीड़ को ध्यान में रखें तो वचन को मानने वालों का अनुपात बहुत अधिक नहीं था। मूसा की व्यवस्था यहूदी कौम को मसीह के आने पर उसे ग्रहण करने में अगुआई करने के लिए दी गई थी (गलतियों 3:24) और शिक्षा तथा संस्कृति यहूदियों की लगभग पन्द्रह सौ वर्षों से

अधिक समय से पालना करती आ रही थी, इसलिए यह जानकर कुछ निराशा होती है कि इन सच्चाइयों को ग्रहण करने वाले केवल .003 प्रतिशत लोग ही थे!

वचन को न मानने वालों की अपेक्षा वचन को ग्रहण करने वाले लोगों को देखा जाए, तो उस पहले दिन यरूशलेम में सफलताओं से अधिक असफलताएं ही हाथ लगीं। पन्द्रह देशों के लोग वहां उपस्थित थे (प्रेरितों 2:9-11), जिससे यरूशलेम ''तम्बुओं के नगर'' में बदल गया होगा। प्रत्येक घर तथा इमारत में यात्री ही दिखाई देते होंगे, और गलियों तथा बाजारों में तम्बुओं की भरमार होगी। आस पास की पहाड़ियों तथा घाटियों को देखकर लगता होगा कि संसार भर के लोग अपने परिवारों समेत वहां तम्बू लगाए बैठे हैं।

निश्चय ही तीन हज़ार से भी अधिक लोगों को बपतिस्मा लेते देखना रोमांचकारी तथा अद्‌भुत लग रहा होगा, परन्तु *जिन्होंने वचन को सुनकर ग्रहण नहीं किया था, उनका क्या बना*? लूका ने उनके बारे में कुछ भी नहीं लिखा, परन्तु बाइबल के छात्रों को इन पंक्तियों में लिखी बातों को पढ़कर अहसास करना चाहिए कि काफ़ी बड़ी संख्या में लोगों ने वचन को ग्रहण नहीं किया।

लूका ने लिखा कि बाद में ''वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया'' (प्रेरितों 4:4), परन्तु जो इन ''बहुतों'' में नहीं थे उनका क्या हुआ? लूका ने ''अधिकतर'' नहीं बल्कि केवल ''बहुतों'' कहा। ''बहुतों'' ने भी सुना और विश्वास *नहीं* किया।

तो, स्तिफनुस पर पथराव किसने किया? क्या वे यहूदी उनमें से नहीं थे जिन्होंने सुसमाचार के सत्य के वचन को सुना था? यदि उन्होंने पहले वचन नहीं सुना था, तो निश्चय ही उस दिन स्तिफनुस के मुख से तो सुन ही लिया होगा (प्रेरितों 7:1-54)। प्रेरितों के काम में दर्ज है कि यरूशलेम की कलीसिया पर अत्याचार इतने बढ़ गए थे, कि चेले अपने घर, नौकरियां तथा परिवार छोड़कर तितर-बितर हो गए (प्रेरितों 8:1-4) थे। स्पष्टतः, फलस्तीन में अधिकांश यहूदियों ने सुसमाचार को ग्रहण नहीं किया था।

बाद में, तरसुस के शाऊल द्वारा दमिश्क में बपतिस्मा लेने पर उसकी हत्या किसने करनी चाही? उसे असन्तुष्ट यहूदियों द्वारा उसकी हत्या करने के षड्‌यन्त्र का पता चल गया और वह टोकरे में बैठकर दीवार से लटककर बच निकला था (प्रेरितों 9:23-25)। पौलुस यरूशलेम लौट तो गया, परन्तु यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों से तर्क के कारण उसकी हत्या का एक और प्रयास हुआ, सो चेलों ने उसे त्रोआस में भेज दिया (प्रेरितों 9:29, 30)।

वहां पर भी जहां लूका ने लिखा कि ''बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 18:8), परन्तु उसने उनके बारे में कुछ नहीं कहा जिन्होंने विश्वास नहीं किया। उसने लिखा कि सब्त के दिनों में यहूदियों के साथ पौलुस के तर्क से परमेश्वर की इतनी निन्दा तथा विरोध हुआ कि पौलुस ने आराधनालय में जाना बन्द कर दिया और थोड़ी दूर तितुस युस्तुस के घर में ही वचन सुनाता था (प्रेरितों 18:4-7)।

कुरिन्थुस के सभी नागरिकों पर अवश्य ही आश्चर्यकर्म होना चाहिए (कहते हैं कि उस समय वहां की जनसंख्या लगभग 2.5 लाख थी) जो उन ''बहुतों'' में नहीं थे।

## एक असफलता का वर्णन

यरूशलेम में पौलुस की गिरफ्तारी के समय फेलिक्स फलस्तीन में राज्यपाल था (प्रेरितों 23:24)। पौलुस को चार जवानों की एक मन्नत पूरी करने में सहायता के लिए त्रुफिमुस नामक एक अन्यजाति को मन्दिर में ले जाने का आरोप लगाकर गिरफ्तार किया गया था (प्रेरितों 21:17-24, 27-29)। पौलुस निर्दोष था, फिर भी उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। उसे महासभा के सामने अपनी सफाई देने का अवसर दिया गया था (प्रेरितों 22:30; 23:1-10), परन्तु बढ़ रहे उपद्रव के अलावा चालीस से अधिक लोगों द्वारा पौलुस की हत्या के षड्यन्त्र के कारण रोमी सेना के कमाण्डर क्लादियुस लुसियास को उसे कैसरिया में भेजना पड़ा (23:9-13, 31-33)।

फेलिक्स और उसकी यहूदी पत्नी द्रुसिल्ला ने (प्रेरितों 24:24), कुछ दिनों के बाद पौलुस को विशेष श्रोता दिए। पौलुस ने इस अवसर का ''धर्म और संयम और आने वाले न्याय की चर्चा'' करने के लिए इस्तेमाल किया (प्रेरितों 24:24, 25)। लूका ने लिखा कि इस प्रकार का प्रचार सुनकर फेलिक्स भयभीत हो उठा था। परन्तु, इस आशा से कि उसे कुछ धन मिलेगा, उसने ''अवसर'' मिलने तक कोई निर्णय लेने में जानबूझकर देरी की (प्रेरितों 24:25, 26)। लूका ने यह नहीं लिखा कि ऐसा ''अवसर'' कभी आया ही नहीं! दो वर्षों के भीतर फेलिक्स की जगह पर पोरसियुस फेलिक्स आ गया और उसका नाम आत्मा की प्रेरणा से दिए इतिहास से निकल गया।

फेलिक्स एक शोचनीय विरोधाभास दिखाता है। उसकी पृष्ठभूमि तथा शिक्षा इतनी अधर्मी थी कि पौलुस द्वारा दी गई किसी आत्मिक चुनौती में उसकी दिलचस्पी हैरानीजनक लगती है। उसका जन्म एक गुलाम के रूप में और पालन-पोषण महलों में एक राजदरबारी के रूप में हुआ और शीघ्र ही उसने वह कपट भी सीख लिया जिससे अपना समर्थन करने वालों का वह आभारी हुआ। वह प्रसिद्धि पाने के लिए बहुत से निष्ठुर तथा क्रूर कृत्य करने का इच्छुक था, वह योनाथन की हत्या के साथ चार सौ से भी अधिक यहूदी याजकों की हत्या में संलिप्त था। एक प्रसिद्ध यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने इसका वर्णन अधिक खुशामद से नहीं किया। एक और आरम्भिक इतिहासकार, टेसिटुस ने फेलिक्स का मूल्यांकन ''एक गुलाम की आत्मा तथा शासक की शक्ति वाले'' व्यक्ति के रूप में किया। अन्त में फेलिक्स राज्यपाल बना और उसकी प्रसिद्धि यहूदियों के साथ प्रतिशोध लेने वाले के रूप में हुई।

फेलिक्स का लालच और धोखेबाजी इस तथ्य में भी दिखाई देती है कि उसने इमेसा के राजा अज़ीज़ की पत्नी द्रुसिल्ला को जो हेरोदेस परिवार की एक महिला थी, चुरा लिया था। द्रुसिल्ला के परदादे, हेरोदेस महान ने यीशु के जन्म के समय बेतलहम में बच्चों को

मरवाने का आदेश दिया था (मत्ती 2:16-18)। उसके दादा के भाई हेरोदेस ऐंटिपास ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काटने का आदेश दिया था (मत्ती 14:1-12)। उसके पिता हेरोदेस अग्रिप्पा ने यूहन्ना के भाई प्रेरित याकूब की हत्या की थी और पतरस को मारना चाहा था (प्रेरितों 12:1, 2)। इतने लालची, लोभी, कमीने और धोखेबाज दम्पत्ति की कल्पना करना कठिन है। यदि किसी अधर्मी दम्पत्ति को सुसमाचार की आवश्यकता थी, तो वे फेलिक्स और द्रुसिल्ला ही थे।

यहूदी लोग पौलुस से इतनी घृणा करते थे कि उन्होंने उसे इस आदमी के सामने पेश कर दिया! फेलिक्स से तो वे घृणा करते ही थे, परन्तु यह भी स्पष्ट है कि वे पौलुस से उससे भी अधिक घृणा करते थे।

## जो प्रचार उसने सुना

पौलुस ने ''धर्म और संयम और आने वाले न्याय'' का प्रचार किया (प्रेरितों 24:25)। वह इन प्रसिद्ध व्यभिचारियों का विरोध करने से नहीं झिझका। उसने इन व्यभिचारियों को परमेश्वर की चेतावनी देने में आनाकानी नहीं की। उसने उनके जीवनों में विनाशक परिस्थितियों की टाल-मटोल नहीं की।

उसने एक अधर्मी दम्पत्ति से ''धर्म'' अर्थात सही जीवन बिताने की बात की। उसने दो लोगों को जो अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करते हुए आगे बढ़ रहे थे ''संयम'' की शिक्षा दी। उसने उन्हें ''आने वाले न्याय'' के विषय में बताया परन्तु परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ने पर उसके भयानक परिणामों की उपेक्षा नहीं की।

एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में पौलुस का हौसला यहां दिखाई देता है; उसने फेलिक्स और द्रुसिल्ला को न केवल लोगों के जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में बताया, बल्कि यह भी बताया कि यदि वे मन नहीं फिराएंगे तो इस जीवन के बाद उनके साथ क्या होगा। उसने उनके पापों के इर्द-गिर्द बड़ा सा गोला नहीं बनाया; उसने उनसे उनके पापों और उनके परिणामों की बात स्पष्ट रूप से की। पौलुस दूसरे अच्छे और दर्जनों पवित्र विषयों पर प्रचार कर सकता था, परन्तु उसने ''समस्या पर प्रचार किया।'' यह जानने के बावजूद कि फेलिक्स ने सैकड़ों यहूदियों को मरवाया था, पौलुस यह भी जानता था कि फेलिक्स के हाथ के एक प्रहार से उसके अपने जीवन की बत्ती भी बुझ सकती थी। उसने बात को लटकाया या टाला नहीं बल्कि *पापियों में सुसमाचार का प्रचार किया*! पुलपिटों पर प्रचार करने वाले पापियों के पास उनके पापों को बताने के लिए परमेश्वर की सच्चाई का प्रचार करेंगे! पापों से क्षमा पाने का दूसरा कौन सा ढंग है?

## जो उत्तर उसने दिया

फेलिक्स डर गया था। शायद उसने अपने पीछे अनन्त विनाश के कदमों की आहट सुन ली थी जो उसके पापी जीवन को दबोचने के लिए दौड़ा आ रहा था, वह पाप के

बारे में इस सीधी बातचीत को अधिक देर तक नहीं सुन पाया, सो उसने बहाने से पौलुस को यह कहकर भेज दिया कि जब उसे अवसर मिलेगा तो वह पौलुस को फिर बुलाएगा। लूका ने लिखा कि फेलिक्स को पौलुस से ''कुछ रुपए मिलने की भी आस थी।'' फेलिक्स अभी भी घूस लेने को तैयार था!

द्रुसिल्ला बिल्कुल हटकर थी! लूका ने उस पर पौलुस के प्रवचन के किसी प्रभाव के बारे में कुछ नहीं बताया। यहूदी संस्कृति में पालन-पोषण होने और मूसा की व्यवस्था से अच्छी तरह परिचित होने के कारण उसने स्पष्टतः अपनी पसन्द वर्षों पहले चुन ली थी। उसने उसकी किसी भी आत्मिक चेतावनी की ओर ध्यान देने से इन्कार कर दिया था क्योंकि वह उसे एक धार्मिक पागल मानती थी। वह स्वार्थी जीवन जीने का मार्ग अपनाना चाहती थी। स्पष्टतः सुसमाचार ''मार्ग के किनारे'' गिरे बीज की तरह उसके हृदय से निकल गया था (लूका 8:5, 12)।

फेलिक्स ने ''अवसर पाकर'' पौलुस से बात करने की इच्छा व्यक्त की थी। क्या मसीह में परिवर्तित होने के लिए अवसर ढूंढ़ा जाता है? अपने पीछे आने वाले लोगों के लिए यीशु के आरम्भिक निर्देशों में से एक यह था कि उन्हें अपना इन्कार करना पड़ेगा (मत्ती 16:24)। अपनी इच्छाओं का इन्कार करने के लिए शायद ही कोई अनुकूल अवसर आता हो। फेलिक्स की देरी और इन्कार का वास्तविक कारण अवश्य ही पाप और स्वयं को त्यागने की उसकी अनिच्छा भी रहा होगा। उसके हृदय ने, यदि वह यीशु मसीह के सुसमाचार से सचमुच ही प्रभावित हुआ था, वासना, लालच, घमण्ड, अभिलाषा और स्वार्थ के तूफानों को सच्चाई की जलती चिंगारियों को बुझाने की अनुमति दे दी थी।

फेलिक्स के लिए राजा अज़ीज़ को द्रुसिल्ला लौटाने और उसकी पत्नी को चुराने और उसके साथ व्यभिचारपूर्वक रहने के लिए क्षमा मांगने का अवसर आना था? लगता नहीं कि फेलिक्स को कभी वह अवसर मिला होगा। बल्कि, यह तो इतनी बड़ी पद्धति का अपमान होगा। यहूदी कौम से उनके याजकों की हत्या के लिए क्षमा मांगने का अवसर कब आना था? उसके लिए भी कोई अवसर कभी नहीं आया होगा।

मसीह में परिवर्तित होने के लिए किसी को भी उचित अवसर की आवश्यकता नहीं पड़ती है! मसीह में परिवर्तित होने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। इसके लिए व्यक्ति को सब कुछ देना पड़ता है अर्थात इसकी कीमत व्यक्ति के पास जो कुछ भी है या जो कुछ भी कभी उसके पास होगा या वह करेगा, हो सकती है। इसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता स्वयं का इन्कार करना है। मसीह में परिवर्तित होने के लिए अपने विचारों तथा इच्छाओं के अनुसार जीवन छोड़ना पड़ता है। मसीह में परिवर्तित होने का अर्थ पाप को मानना, समर्पण, अभिषेक और साहस है। अवसर कभी भी किसी को मसीह की ओर नहीं ले जाता!

# सारांश

प्रेरितों के काम मसीह में मनपरिवर्तनों की रोमांचकारी पुस्तक है, परन्तु यह बहुत सी असफलताओं का संकेत देती है और उन पापी लोगों की बातें भी बताती है जिन्होंने सुसमाचार का इन्कार किया था। सबसे प्रसिद्ध इन्कार तो फेलिक्स का ही था। वह समझौते के एक दुखद खोजी की तरह अनन्त इतिहास में समा गया है और परमेश्वर ने कभी किसी बात के लिए समझौता करने के लिए नहीं कहा है।

पाप की मजदूरी आज भी मौत है (रोमियों 6:23)। दूसरी ओर, परमेश्वर का मुफ़्त वर-दान आज भी मसीह में अनन्त जीवन है। हर व्यक्ति को अपनी पसन्द चुनने का अधिकार दिया जाता है। परमेश्वर उद्धार देने की पेशकश करता है। मसीह हर सुनने वाले के हृदय का द्वार खटखटाता है और अन्दर आना चाहता है (प्रकाशितवाक्य 3:20-22)। पाप के भयभीत करने वाले बोझों और परिणामों की तुलना में, मसीह का जुआ सहज और उसका बोझ हल्का है (मत्ती 11:28-30)।